[illegible]

(10) (9)

कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या **2238136**

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन मंगलवार

दिनांक 21-03-2023

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	3
2	6	20	3
3	12	21	4
4	2	22	4
5	2	23	4
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	80
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	2	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 46332

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 168/2021

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

1\. 1) अ) भय
2) स) स्थायी
3) अ) शोषण की प्रक्रिया
4) अ) वणग्वृत्ति से
5) द) छात्रसंघ की

किंतु यह - - - - - - - - - कुटिया मेरी।
6) ब) बचपन
7) अ) भार
8) अ) पवित्र
9) स) बचपन
10) द) कुटिया
11) अ) हिरोशिमा के परमाणु विस्फोट का
12) ब) माता का अँचल

12

2\. 1) ~~गुणवाचक~~ भाववाचक
2) निजवाचक सर्वनाम
3) अकर्मक
4) दो
5) तीन
6) कृदन्त / कृत

6

कृ. पृ. प.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
12	3)	1) जिस सन्धि में इ/ई या उ/ऊ का लोप होकर उसके स्थान पर इ/ई की जगह 'य' और उ/ऊ की जगह 'व' हो जाता है, यण सन्धि कहलाती है।
		उदाहरण :- अति + अधिक = अत्याधिक
		2) द्विगु समास :- इसमें पहला पद संख्यावाची होता है और वही प्रधान होता है।
		उदाहरण :- त्रिभुवन।
		द्वन्द्व समास :- इसमें दोनों पद प्रधान होते है, और विग्रह में योजक चिन्ह(-) का लोप होता है।
		उदाहरण :- माता - पिता।
		3) कीचड़ उछालना :- अपमानित करना।
		4) अर्थ :- एक व्यक्ति के बुद्धिमान होने पर वह सबको बुद्धि देकर सबका कल्याण करता है।
		5) 'बालगोबिन भगत' पाठ के माध्यम से लेखक ने यह दर्शाया है कि साधु वस्त्र व बाह्यी आडम्बरो से नहीं बल्कि मन, गुणो और वचन से तथा अपने कार्यों से बनते है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

6) नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की से बाहर फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पोंछकर इस भाव को दर्शाया है कि यही होती है खानदानी तहजीब, नफासत और नजाकत साथ ही इससे उनका बनावटी रौब भी दर्शाया गया।

7) 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' संस्मरण फ़ादर कामिल बुल्के के संबंध में है, जो कि एक विदेशी भारतीय साधु थे। यह उनके निधन पर लेखक की भावुकता स्पष्ट करता है।

8) 'एक कहानी यह भी' पाठ में मन्नू भण्डारी पर उनके पिताजी और हिन्दी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल जी का प्रभाव अधिक उभर कर आया है।

9) गोपियों ने श्री कृष्ण को उनके लिए हारिल की लकरी कहा है, क्योंकि वह मन-क्रम-वचन से उन्हें अपना चुकी है और उन्हीं का नाम ही जपती रहती हैं।

10) भाव यह है कि चाँदनी रात में तारों से सजी नायिका मूर्तियों की ज्योति के समान प्रकाशवान हो, मल्लिका के फ़ूलों के रस के समान प्रतीत हो रही हैं।

11) "खैरियत चाहते हो तो अपना यह कफ़न लेकर यहाँ से सीधे चले जाओ!" यह वाक्य दुलारी ने टुन्नू से कहा था।

कृ. पृ. उ.

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

12) लेखिका जब गंतोक की यात्रा पर गई थी तो उन्होंने कई सुरम्य और मंत्रमुग्ध करने- वाले प्रदेश देखे। हिमालय के एक पर्वत- स्थल जोकि एक टूरिस्ट स्पाट था लेखिका ने उसकी सुंदरता व तल्लीनता देखकर ही ऐसा कहा।

खण्ड - ब

4) कैप्टन एक देशभक्त था, वह चश्मे बेचता था उसे नेताजी की मूर्ति पर चश्मा न देखकर बहुत बुरा लगता था, इसलिए वह अपने - जीवन के अभावों मे से भी नेताजी की - मूर्ति पर चश्मा लगा देता था, उसके इस भाव से उसकी देशप्रेम की भावना और देशभक्ति झलकती है।

2

5) बालगोबिन भगत के ऐसा कहने के पीछे दो कारण नीहित थे, जो इस प्रकार है:-

1) उनकी पतोहू अभी जवान थी, वह उसका जीवन सँवारने के लिए उसके भाई के साथ उसे भेजकर उसका पुनर्विवाह करना चाहते थे।

2) उनकी पतोहू जाना नही चाहती थी, वह - भगत के साथ रहकर उनकी सेवा करना चाहती थी।

2

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	6)	लेखक के गाड़ी में बैठने पर नवाब साहब की प्रतिक्रिया कुछ इस प्रकार थी कि सुख से बैठे नवाब साहब के एकांत में विघ्न सा पड़ गया। उनकी मुद्रा व हाव-भाव देखकर स्पष्ट था कि वह लेखक से बात करने को ज़रा भी उत्सुक न थे। उनके पास कुछ खीरे पड़े थे, जो वह खाने के लिए लाए थे, अब वह इस समस्या में थे कि खीरे खाने से उनका रोब घट जाएगा।
2	7)	फ़ादर कामिल बुल्के के व्यक्तित्व की कोई दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :- 1) साधु होते हुए भी वह एक बार सम्बन्ध बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। उनसे दस साल मिलने पर भी वह उतने ही प्रेम से मिलते थे। 2) वह दूसरों के सुख दुःख के बारे में पता रखते थे और सबको सहारा देते थे। वह एक हिन्दी प्रेमी थे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना उनकी इच्छा थी।
2	8)	गोपियों को उद्धव का सन्देश पसन्द न आने के कारण निम्नलिखित हैं :- 1) गोपियाँ श्री कृष्ण से प्रेम करती थी तो उन्हें भला योग और निर्गुण ब्रह्म का सन्देश पसन्द नहीं आया। 2) गोपियाँ श्री कृष्ण के आने की प्रतिक्षा में प्रेम विरह में जल रही थी और योग का सन्देश सुनकर कुपित हो गई थी।

कृ.पृ.उ.

BSER-J-68/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	9)	लक्ष्मण के वचनों से बढ़े हुए परशुराम जी के क्रोध को श्री रामचन्द्र जी ने शान्त किया। श्री राम ने अपने मधुर और कोमल वचनों द्वारा परशुराम जी की क्रोधाग्नि को शांत किया। श्री राम के वचनों ने परशुराम जी की क्रोधाग्नि पर जल का काम कर उन्हें शांत किया था। इस प्रकार परशुराम जी शांत हुए।
2		
	10)	'संगतकार' कविता प्रमुख गायक की सुर में लय मिलाने वाले उसके सहायक के महत्त्वपूर्ण योगदान को दर्शाती हैं, जो कभी भी ऊँचा न गाकर अपने गुरू का सम्मान करता हैं। सुर भूल जाने पर याद दिलाता हैं तथा स्वयं योग्य होने पर भी हमेशा पीछे रहकर मुख्य गायक को आगे करता हैं।
2		
	11)	कवि ऋतुराज के ऐसा कहने के पीछे निम्नलिखित कारण हैं :-
2		1) लड़की जिसका विवाह हुआ हैं वह विवाह से जुड़े सुख अर्थात पति-प्रेम और ससुराल के लोगो के प्रेम मिलने के बारे में सोच रही हैं, परन्तु विवाह के पश्चात के दुःखो से अनभिज्ञ हैं।
		2) लड़की को लगता हैं कि वह वस्त्र, आभूषणों से सजकर सबको रिझाएगी, पर वो नहीं

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जानकी की वैवाहिक जीवन इतना सरल नहीं जितना उसे लगता है।

12) 'कवी - लोंग स्टॉक' जगह के अपने कई महत्व हैं जो कि निम्नलिखित हैं:-

1) यहाँ पर 'गाइड' फिल्म की शूटिंग हुई थी; जिसके कारण यह पर्यटक में प्रसिद्ध है।
2) यह गंतोक की दो जातियों का शांति-स्थल है।
3) वहाँ का वातावरण शांति से पूरित है।
4) वह एक सुंदर, मनोहर., प्राकृतिक व सुरम्य जगह है।

1

13) मूर्तिकार ने अन्त में जॉर्ज पंचम की नाक का यह हल निकाला कि किसी जीवित इन्सान को पैसे देकर उसकी नाक जॉर्ज पंचम की लाट पर लगाई जाए। अर्थात किसी जरूरतमंद इन्सान को पैसे देकर उसकी नाक वहाँ काटकर चिपका दी जाए। ऐसा ही किया गया। यहाँ स्पष्ट है कि एक जीवित इन्सान के प्राण किसी मूर्ति की नाक से ज्यादा उन लोगो को प्रतित होते हैं।

1

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	14)	'माता का अँचल' पाठ का शीर्षक सर्वथा उचित है जो कि कहानी में पता चलता है कि बालक भोलानाथ अपने पिता से बहुत प्रेम करता था, सारा समय पिता के साथ गुजारता था। परंतु कहानी के अंत में जब वो साँप को अपने समक्ष देखकर घायल होकर घर जाता है तो सबसे पहले माँ के आँचल में छिपता है क्योंकि एक बालक के लिए वहीं सबसे सुरक्षित प्रेम से पूरित और शांत जगह होती है। अतः शीर्षक सर्वथा सार्थक है।
2	15)	सूरदास जन्म :- 1478 में दिल्ली के पास सीही में हुआ। * वे जन्मान्ध थे। * महर्षि वल्लभाचार्य के अष्टछाप के शिष्यों में वहीं सर्वाधिक लोकप्रिय हुई। * वह मथुरा और वृन्दावन के बीच गऊघाट पर रहकर श्री नाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे। प्रमुख कृतियाँ :- सूरसागर, साहित्य लहरी, सूरसारावली। *सर्वाधिक प्रसिद्ध सूरसागर हुआ। * सूर भक्तकवि और वात्सल्य और श्रृंगार के कवि हैं। मृत्यु :- 1583 में पारसौली में हुई।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

16) मन्नू भण्डारी

जन्म :- 1931 में भानपुर गाँव, मध्य प्रदेश में हुआ।

शिक्षा :- इंटर्न तक की शिक्षा-दीक्षा राजस्थान में हुई। हिन्दी में एम. ए. किया।

* बाद में दिल्ली से स्वतंत्र लेखन किया।

प्रमुख कृत्तियाँ :- एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है, त्रिशंकु (कहानी-संग्रह), महाभोज और आपका बंटी (उपन्यास)

* 'एक कहानी यह भी' नाम से आत्मकथा भी-लिखी।

2

पुरस्कार :- राजस्थान नाटक साहित्य अकादमी-पुरस्कार आदि।

मृत्यु :- 15 नवम्बर 2021 में हुई।

खण्ड - स

17) फ़ादर बुल्के - - - - - - - - पाया है।

* प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के पाठ 'मानवीय करुणा की दिव्य-चमक' से अवतरित है। यह श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा लिखित संस्मरण है। इसमें फ़ादर बुल्के का अपनापन और हिन्दी प्रेम व्यक्त हुआ है।

* व्याख्या :- लेखक फ़ादर बुल्के के बारे में बताते हुए कहते हैं कि वह केवल संकल्प

कृ. पृ. उ.

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

के सन्यासी थे, वह मन से कभी सन्यासी नहीं थे। जिसका कारण यह था कि फ़ादर जिससे भी रिश्ता बनाते कभी तोड़ते नहीं थे। उनसे दस साल के बाद मिलने पर वैसा ही प्रेम और आनन्द महसूस होता था जो उससे पहले होता था। फादर जब भी दिल्ली जाते थे लेखक को खोजकर, किसी प्रकार समय निकालकर, गर्मी, सर्दी और बरसात की परवाह किए बिना लेखक से जरूर मिलते थे। फिर चाहे वह मिलन दो मिनट का ही हो। लेखक कहते हैं ऐसा कोई सन्यासी करता है भला ? फ़ादर को हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की चिंता थी। हर मंच पर इसके बारे में अपने विचार रखते थे, उनके तर्क ऐसा होते कि सामने कोई बोल नहीं पाता था। यहीं एक सवाल ऐसा था जिस पर लेखक ने उन्हें परेशान देखा है और जब कोई भारतीय ही हिन्दी भाषी होकर हिन्दी की उपेक्षा करता था तो फ़ादर काफी दुःखी होते थे।

(3)

* विशेष (गद्यगत्त विशेषताएँ) :- 1) फ़ादर का हिन्दी प्रेम व्यक्त हुआ है।
2) भाषा सहज, सरल व प्रवाहमान है।
3) भाषा शैली उत्तम है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18) डार द्रुम - - - - - - - चटकारी दें।

* प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक 'क्षितिज' के पाठ = 3 देव के सवैये और कवित्त से लिया गया हैं। इसके कवि देव हैं। कवि ने बसंत को कामदेव के बालक के रूप में चित्रित करते हुए प्रकृति के साथ उनका रागात्मक संबंध बताया हैं।

* व्याख्या :- कवि कहते हैं कि बालक रूपी बसंत के लिए पेड़ और उसकी लताएँ पालना बनी हैं और पेड़ के नए पत्ते उसके लिए बिछौना बने हैं। उसके सुंदर से तन पर फूलों का झिंगूला शोभायमान और छविमान हो रहा हैं। हवा उसे झूला रही हैं और मोर और तोते उससे मधुर वाणी में बातें कर रहे हैं। कोयल उससे हास-परिहास करती हुए उसे ताली बजाकर झूला रही हैं। कमल की कली रूपी नायिका सिर पर लताओं की साड़ी ओढ़कर, अपने पराग कणों को ऐसे उड़ा रही हैं कि मानो राई न्युन से नज़र उतार रही हो। कामदेव के बालक बसंत को प्रातः काल सुन्दर गुलाब की कलियाँ चुटकी बजाकर उठाती हैं।

3

* विशेष (काव्य सौंदर्य) :- 1) प्रकृति का चित्रण मानव भावों के साथ किया गया है।
2) प्रकृति का मानवीकरण किया गया हैं।
3) पूर्ण कवित्त में अनुप्रास अलंकार की छटा हैं।
4) ब्रजभाषा हैं कवित्त छंद हैं, नाद सौंदर्य हैं, प्रतीकात्मकता हैं और श्रृंगार रस हैं।

क्र.पृ.उ.

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

19) लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने स्त्रीशिक्षा के महत्व को कुछ इस प्रकार सिद्ध किया गया है :-

1) जो लोगे यह कहते हैं कि प्राचीन काल में - स्त्रियों को पढ़ाया न जाता था उनके लिए - लेखक का कहना है कि गार्गी ने बड़े - बड़े ब्रह्मवादियों को, मण्डन मिश्र की पत्नी ने शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में परास्त किया था। दूसरा यह कि रुकमणी ने श्रीकृष्ण को पत्र लिखा था।

2) जो लोग यह कहते हैं कि शिक्षा से स्त्री की मति भ्रष्ट होती हैं उन्हें यह कहा गया है कि शिक्षित पुरुष भी तो चोरी, हत्या आदि कार्य करते हैं तो, उन्हें भी शिक्षा न दी जाए।

3) जो लोग कहते हैं कि प्राकृत बोलने वाली स्त्रियाँ अनपढ़ थी उन्हें यह बताया गया कि प्राकृत जनसमुदाय की भाषा थी, जो यह कहते हैं कि शिक्षा - प्रणाली ठीक नहीं उन्हें शिक्षा - प्रणाली में बदलाव करने की सलाह दी गई।

3

BSER-168/2021

20) 'आत्मकथ्य' कविता में कवि ने यथार्थ के बारे में बताते हुए, जीवन की नश्वरता को रेखांकित किया है। कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा यह बताया गया है कि उनका जीवन एक आम आदमी का जीवन है और अभी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उन्होने कुछ महान कार्य नहीं किया जो वो अपने बारे में लिखे। यह कविता मूलत: आत्मकथा को स्वीकार न करने के लिए लिखी गई। कवि कहते हैं कि न तो वह अपनी कमजोरियाँ बताना चाहते हैं, न ही अपने निजी क्षण, वो अपने जीवन को खाली गागर बताते हैं जिसमें कोई रस नहीं है। वह अन्त में कहते हैं कि उनकी जो व्यथाएँ और दुःख वह बड़ी मुश्किल से भूले हैं, उन्हें वह याद नहीं करना चाहते हैं। 'आत्मकथ्य' कविता का यही मूल भाव है। कवि अपना जीवन गोपनीय ही रखना चाहते हैं।

3

BSER/168/2021

खण्ड - द

21) जीवन में शिक्षा का महत्व

(i) प्रस्तावना :- आजकल के युग में शिक्षा का महत्व बहुत अधिक है। शिक्षा से ही मनुष्य का कल्याण होता है। शिक्षा भी हमारा एक अधिकार है, जिसे हमें अवश्य ग्रहण करना चाहिए।

"एक शिक्षित व्यक्ति ही,
अपने देश का उचित निर्माण करता है।"

(ii) शिक्षा का अर्थ :- हम जब विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने जाते हैं, तो हम शिक्षा के अर्थ को संकुचित कर देते हैं। शिक्षा

कृ.पृ.उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं होता हैं। शिक्षा एक बहुत व्यापक शब्द हैं। जिसका अर्थ हम केवल किताब तक सीमित नहीं रख सकते हैं। शिक्षा का अर्थ हैं :- शारीरिक, मानसिक, मौलिक और सामाजिक ज्ञान। शिक्षा को हम अपने जीवन में हर स्तर पर प्राप्त कर सकते हैं।

(iii) शिक्षा से जीवन का विकास :- हम हमारे अंधकार युक्त जीवन को शिक्षा रूपी दीपक से उज्जवल बना सकते हैं। शिक्षित होना अपने आप में एक गर्व की बात हैं। शिक्षित होने पर समाज में और हर जगह सम्मान प्राप्त होता हैं। एक शिक्षित व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार कार्य प्राप्त होता हैं और वह अपने सामर्थ्य के अनुसार अर्जित करने में सक्षम हो पाता हैं।

" शिक्षा को रखो अपने पास
शिक्षा से देश का होगा विकास "

(iv) शिक्षा के विविध महत्व :- हमारे समाज में कुछ लोग शिक्षा केवल इसीलिए ग्रहण करते हैं ताकि अच्छी नौकरी मिल जाए, किंतु शिक्षा के जीवन में विविध महत्व हैं जो इस प्रकार हैं :-

1) एक शिक्षित व्यक्ति ~~सब~~ सभ्य बनता हैं।
2) उसका कोई शोषण नहीं कर सकता।
3) वह अपने अधिकार जानता हैं।
4) वह जागरूक रहकर अपने देश के प्रति अच्छा नागरिक बनता हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(V) उपसंहार :- इस पूर्ण बात का निष्कर्ष यही निकलता है कि शिक्षा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो हमें हर क्षेत्र में समान तो दिलाता है साथ ही हमें एक अच्छा इन्सान भी बनाता है।

4

23)

खुशखबरी

देवेश उद्यान

खुशखबरी

आपको यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि आपके पास के उद्यान में लगने वाली है
'पुष्प प्रदर्शनी'
सुनहरा मौका मत खोइए एक बार जरूर पधारे !!! वसंत ऋतु पर अच्छा मौका !!

4

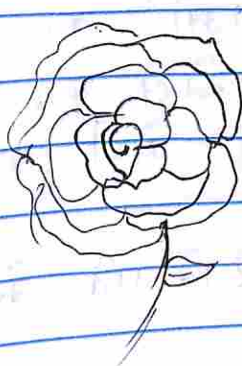

समय :- सुबह 10 बजे दोपहर 4 बजे तक।

स्थान :- देवेश उद्यान
बी - 108, उदयपुर।

एक बार जरूर पधारें।

फूल बढ़ाते हैं जिन्दगी की शान
इन्हीं से बने जीवन खुशहाल

कृ. पृ. उ.

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - द

22) सेवा में,

आदरणीय प्रधानाचार्य जी,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
विशालपुर।

विषय :- खेल सामग्री मँगवाने हेतु।

महोदय,

सविनय नम्र निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा - 10 का विद्यार्थी हूँ। मैं आपका ध्यान विद्यालय के खेल - कूद के क्षेत्र में दिलवाना चाहूँगा। हमारे विद्यालय में बहुत अच्छे खिलाड़ी उपस्थित हैं जो क्रिकेट, फुटबॉल और बास्केट बॉल खेलने को उत्सुक है।

किंतु विद्यालय में इन खेलो से सम्बन्धित सामग्री का अभाव है। जिसके कारण अभ्यास के समय पर काफी दुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है। विद्यालय को खेल कूद में आगे बढ़ाने के लिए कृपया कर मेरी बात पर जरूर गौर करें।

आशा हैं कि आप परिस्थिति को समझकर उचित निर्णय लेंगे।

प्रार्थी
नरेन्द्र
कक्षा :- X 'ब'

दिनांक :- 21-03-23

समाप्त

BSER-16/2021

(5)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021